IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के काव्य में वेदना की अभिव्यक्ति

सिमरन सुहाग
नेट ,जेआरएफ
मकान नं. - 6 , आवासीय परिसर
राजकीय स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय
रोहतक

' वेदना ' शब्द की व्युत्पत्ति ' विद् ' धातु में ल्युट प्रत्यय लगकर हुई है , जिसका अर्थ है _ अनुभूति । संदर्भ के अनुसार वेदना शब्द के कई अर्थ उपलब्ध होते हैं , जैसे - दुख , संताप , पीड़ा , विवाह आदि । वास्तव में यह मानव मन की एक वृत्ति है जिसमें दुख भाव का समावेश रहता है । शोक एवं दुख की यही वृत्ति साहित्य के मूल भाव के रूप में साहित्य में अनुस्यूत रहती है । " साहित्य में वेदना से अभिप्राय हार्दिक या मानसिक पीड़ा अथवा दुख है ।" [1] ' आह से उपजा होगा गान ' जैसी पंक्तियाँ इसी तथ्य की पुष्टि करती हैं। यह वेदना ही है जो कवि में एक विशिष्ट अनुभूति जगाती है । आदि कवि वाल्मीकि से लेकर जायसी , सूर , महादेवी एवं निराला तक ने वेदना की अनुभूति को ही अपने काव्य का आधार बनाया है । यहाँ तक कि कबीर एवं घनानंद के काव्य में भी यह वेदना ' प्रेम की पीर ' के रूप में विद्यमान है ।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला छायावाद के प्रमुख स्तंभों में से एक हैं । समस्त छायावादी काव्य में वेदना एक अनिवार्य तत्व के रूप में विद्यमान है । छायावादी कवियों ने सृष्टि के कण-कण में इसी वेदना की अनुभूति की है । उन्होंने अपनी इस वेदना को निर्वैयक्तिक बनाकर संपूर्ण समाज के साथ जोड़ दिया है , अपनी वेदना को विश्व वेदना में मिला दिया है।

महाकवि निराला का संपूर्ण जीवन संघर्षमय रहा है ।उनकी जन्मभूमि मेदनीपुर (बंगाल) तथा मूल निवासी गढ़ाकोला (उत्तर प्रदेश) है । डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार, "बैसवाड़ा और बंगभूमि की पृष्ठभूमि को अपने में समेटे निराला एक ऐसी वाणी लेकर आते हैं जिसका उद्वेलन उनके अंतर्मन में हो रहा था और जो अग्नि उनके हृदय में सुलग रही थी ।"[2] निराला जी के जीवन के अभाव , उनका अव्यवस्थित जीवन एवं सामाजिक - पारिवारिक सरोकार , सभी मिलकर उनकी वाणी को वेदना से भर देते हैं । निराला आजीवन अभाव अन्याय अत्याचार से संघर्ष करते रहे व्यवस्था में ही अपने परिवार का खत्म होते देखा था एक के बाद एक पाठ तुमने गहरे अवसाद में डुबो दिया । इस संदर्भ में श्री राम अवध शास्त्री लिखते हैं, "निराला का संपूर्ण जीवन संघर्ष का जीवन रहा है जिसमें कवि को जय पराजय दोनों मिली दुख ही कवि-जीवन की कहानी रही जिसका ना कोई अंत है ना आदि "[3] 'पतनोन्मुख' कविता में स्वयं निराला जी लिखते हैं, " हमारा डूब रहा दिनमान
मास-मास, दिन-दिन,
प्रतिपल उगल रहे हों गरल-अनल ।"4
अपने प्रियजनों को याद करते हुए वे कहते हैं, मेरे प्रिय सब बुरे गए , सब भले गए ।"5 प्रियजनों के अभाव में उनका जीवन संसार नीरस एवं सूना हो गया है , " तुम छोड़ गए द्वार । तब से यह सुना संसार ।"6 कई बार तो वे अपनी व्यथा - कथा को कह पाने में भी स्वयं को असमर्थ पाते हैं _
" कैसे दुख गाथा में गाऊँ ,
छिन्न प्रकृति के निर्दय आघातों से हो जाते हैं ,
जो पुष्प नहीं कहते कुछ केवल रो जाते हैं ,
वैसे ही मैंने अपना सर्वस्व गँवाया ,
रूप और यौवन चिता में पर क्या पाया ।"7
पुत्री की अकस्मात मृत्यु उन्हें विचलित कर देती है तथा वे अपने जीवन को निरर्थक मानने लगते हैं । उन्हें इस बात का अत्यंत खेद है कि वह अपनी पुत्री के लिए कुछ भी न कर सके_
"धन्ये, मैं पिता निरर्थक था, कुछ भी तेरे हित न कर सका !"8
निराला द्वारा रचित 'सरोज स्मृति' संपूर्ण हिंदी साहित्य का अद्वितीय शोक-गीत है, जिसमें कवि - हृदय की वेदना साकार हो उठी है। अपनी गीतात्मक अभिव्यक्ति द्वारा निराला अपनी वेदना के विरेचन का ही प्रयास करते हैं _
" गीत गाने दो मुझे तो , वेदना को रोकने दो "9
उनके गीतों में जीवन का अवसाद साक्षात् उतर आया है _

" मेरे गीतों का छाया अवसाद , देखा जहाँ वहीं है करुणा/ घोर विषाद "
वेदना का मूर्छित संसार देखकर कवि कलप - कलप कर रोता है , उसे लगता है कि सारा संसार ही आज वेदना से रो रहा है _
" है प्लावित कर जग को असीम रोदन लहराता ,
यह चारों ओर घोर संशयमय क्या होता है ?
क्यों सारा संसार आज इतना रोता है ?"10

वैयक्तिक वेदना के साथ-साथ निराला के काव्य में वेदना का मानवीय स्वर भी विद्यमान है । कवि की वैयक्तिक वेदना अपने विस्तार में संपूर्ण मानवता से जुड़ जाती है । आत्मबोध से उत्पन्न उनकी यह वेदना जनवादी स्वरूप ग्रहण कर लेती है ।[11] ' कहाँ देश है ' कविता में कवि की मानवीय चिंता इस प्रकार व्यक्त होती है_
" है प्लावित कर जग को असीम रोदन लहराता ,
यह चारों ओर घोर संशयमय क्या होता है ?
क्यों सारा संसार आज इतना रोता है ?" [12]
खंडहर के प्रति , वनकुसुमों की शय्या , दीन , तोड़ती पत्थर ,विधवा , तरंगों के प्रति , गरीबों की पुकार , बाबा और नाती आदि अनेक कविताएँ मानव मात्र के दुख को स्वर देती हैं ।

निराला जी की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना का स्वर भी मुखर हुआ है । इस चेतना में जब करुण तत्व का समावेश जाता है तो यह वेदना का रूप धारण कर लेती है । कवि का हृदय राष्ट्र की दासताजन्य दुर्दशा पर बिलखता रहता है । मातृभूमि , वंदना , तुलसीदास , महाराज शिवाजी का पत्र , वन बेला , बादल राग एवं उद्बोधन जैसी कविताएँ इसका सशक्त प्रमाण हैं । ' दीन ' नामक कविता में व्यक्त उग्र शोषण एवं उत्पीड़न का चित्रण करते हुए लिखते हैं _
" उत्पीड़न का राज्य दुख ही दुख, यहाँ है सदा उठाना । " [13]
देश की दुर्दशा की वेदनाजन्य अभिव्यक्ति द्वारा निराला सोए हुए राष्ट्र को जगाने तथा अपनी दुर्दशा को मिटाने का आह्वान करते हैं _
"वर दे वीणावादिनी वर दे नव स्वतंत्र रव अमृत मंत्र नव भारत में भर दे ।"14

महाकवि निराला जहाँ एक ओर जीवन संघर्षों में उलझे रहे वहीं दूसरी ओर परम सत्य ईश्वर एवं धर्म की ओर भी उन्मुख रहे हैं । यह उन्मुक्ति उनकी वेदना को कुछ कम करने में सहायक होती है _
" मेरे अंतर में आते ही देव निरंतर, कर जाते हो व्यथा भार लघु ।"15
अनेकश: अनुनय - विनय करने पर भी जब करुणामय का द्वार बंद रहता है तो कवि का मन निराशा से भर उठता है तथा वह करुणामय के प्रति संशय व्यक्त करने लगता है _
" तुम्हें कहूँ मैं , कहो प्रेम मय अथवा दुख के देव सदा ही निर्दय ?" 16
तथा भगवान से उपालंभ करता है _
" निर्दय, कहाँ है तेरी दया मुझे दुख देने में जस क्या है ?" 17 निर्दय देव के प्रति इस प्रकार उपालंभ करते हुए भी निराला की आस्था उनमें बनी रहती है । ' खेवा ' नामक कविता में वे ईश्वर से ही अवलंब मांगते हैं_
" डोलती नाव , प्रखर है धार , संभालो जीवन खेवनहार ।"18
महाकवि निराला दुख और वेदना से परित्राण पाने के लिए आत्मज्ञान आवश्यक मानते हैं । आत्मज्ञान के अभाव में ही व्यक्ति दुख एवं वेदना सहन करता हुआ संसार में भटकता फिरता है । 20 कवि के अनुसार यह आत्मज्ञान व्यक्ति के अंतस् में ही विद्यमान है_
" पास ही रे हीरे की खान , खोजता कहाँ और नादान ।" 19
निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि निराला के काव्य में वेदना के विविध रूप दिखाई देते हैं । उनके काव्य में मुखरित यह वेदना न केवल उनकी वैयक्तिक वेदना है , वरन् उस प्रत्येक शोषित-पीड़ित मानव की वेदना है जो बार-बार परिस्थितियों से झूलता है . लड़ता है , गिरता है और आगे बढ़ता रहता है ।

संदर्भ संकेत :-

1. डॉ. राजेश कुमार , संक. ' निराला का काव्य संसार ' संपा. डॉ. राजेंद्र सिंह , साहित्य संचय प्रकाशन , दिल्ली , प्रथम संस्करण - 2019 ,पृ. सं.-11.
2. डॉ. रामविलास शर्मा , ' निराला की साहित्य साधना-1', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली , संस्करण 1973 , पृ. सं.108.
3. वही ,पृ. सं. 351.
4. निराला रचनावली- 1, संपा. नंदकिशोर नवल , राजकमल प्रकाशन, दिल्ली सं. 2006 , पृ. सं.146.
5. निराला रचनावली- 1, पृ.सं.151.
6. निराला रचनावली- 1, पृ.सं.229.
7. निराला रचनावली- 1, पृ.सं.98.
8. निराला रचनावली- 1, पृ.सं.315.
9. निराला रचनावली- 2 , पृ.सं.75.
10. निराला रचनावली- 1, पृ.सं.398.
11. निराला रचनावली- 1, पृ.सं.111.
12. निराला रचनावली- 1, पृ.सं.398.

13. निराला रचनावली- 1, पृ.सं.137.
14. निराला रचनावली- 1, पृ.सं.224.
15. निराला रचनावली- 1, पृ.सं.112.
16. निराला रचनावली- 1, पृ.सं.98.
17. निराला रचनावली- 1, पृ.सं.47.
18. निराला रचनावली- 1, पृ.सं.201.
19. निराला रचनावली- 1, पृ.सं.214.
20. डॉ. राजेश कुमार , ' निराला का काव्य संसार ' संपा. डॉ. राजेंद्र सिंह , साहित्य संचय प्रकाशन, दिल्ली , प्रथम संस्करण - 2019 ,पृ. सं. 25.